प्रश्न- कॉम्टे के तीन स्तरीय नियमों के सिद्धान्त की आलोचनात्मक व्याख्या करें। (5)

उत्तर — उन्नीसवीं शताब्दी के प्रमुख विचारकों में अग्रणी अगस्त कॉम्टे का जन्म 19 जनवरी 1798 में फ्रांस में हुआ था। आप एक असाधारण प्रतिभा और इसलिए सम्पन्न विचारक थे। आपने सामाजिक विचारधारा का आधार कल्पना न रखकर वैज्ञानिक तथ्य, निरीक्षण, परीक्षण तथा वर्गीकरण रखा। सामाजिक विचारधारा के क्षेत्र में कॉम्ट का तीन स्तरों का नियम उनका एक महत्वपूर्ण योगदान है। इन्होंने मानव के बौद्धिक विकास के तीन स्पष्ट स्तरों की व्याख्या प्रस्तुत किया है जो विभिन्न स्तरों की व्याख्या निम्नवत प्रस्तुत है-

1. धार्मिक स्तर
2. तात्विक स्तर और
3. प्रत्यक्ष स्तर।

कॉम्ट ने लिखा है, "सभी समाजों में और सभी युगों में मानव के बौद्धिक विकास का अध्ययन करने से उस महान आधारभूत नियम का पता चलता है जिसके अधीन मानव की बुद्धि आवश्यक रूप से होती है और निरन्तर [illegible] हमारे संगठन के तथ्यों तथा हमारे ऐतिहासिक अनुभवों दोनों में विद्यमान है। यह नियम इस प्रकार है: हमारी प्रत्येक प्रमुख अवधारणा, हमारे ज्ञान की प्रत्येक शाखा, एक के बाद तीन भिन्न-भिन्न सैद्धान्तिक दशाओं से होकर गुजरती है - धार्मिक अथवा काल्पनिक अवस्था, तात्विक अथवा अमूर्त अवस्था और वैज्ञानिक अथवा प्रत्यक्ष अवस्था।

1. धार्मिक स्तर - "धार्मिक अवस्था में बुद्धि की आवश्यक प्रकृति की खोज करने में या प्राकृतिक घटनाओं के घटित होने के एवं प्रमुख तथा अन्तिम कारणों को जानने के प्रयत्न में मनुष्य का मस्तिष्क यह मान लेता है कि समस्त घटनाएँ अलौकिक और अदृश्य प्राणियों की तात्कालिक क्रियाओं का परिणाम है"। इस स्तर में समस्त चीजों के ऊपर के प्रतिरूप के रूप में या किन्हीं अलौकिक प्राणियों की तात्कालिक क्रियाओं के रूप में स्वीकार किया जाता है। इस स्तर में मानव की यह धारणा होती है कि समस्त चीजों का कोई रूप अलौकिक शक्तियाँ अर्थात देवता या आत्मा है तथा समस्त वस्तुओं में वही शक्ति व्याप्त है। प्राकृतिक घटनाओं के घटित होने में, इस स्तर पर मानव को एक ही कारण दिखाई देता है वह कारण है देवी-देवता या ऐसी ही अन्य अलौकिक शक्ति। यह विचार ग़लत है या सही, यह दूसरी बात है परन्तु इस स्तर पर इसी रूप में अपने आस-पास के विषय में मनुष्य सोचता है। मानव भी यही सोच तथा चिन्तन के आधार

पर मानव और पशु में अन्तर स्पष्ट करता है। कॉम्ट के अनुसार इस के भी तीन उपस्तर हैं:-

(1) जीवित सत्तावाद (ii) बहुदेववाद और (iii) अद्वैतवाद।

(i) प्रथम उप-स्तर पर प्रत्येक चीज में एक जीवित सत्ता का अनुमान किया जाता है और उसी के अनुसार अनेक जादू-टोनों पर विश्वास किया जाता है।

(ii) द्वितीय उप-स्तर पर मनुष्यों का मस्तिष्क अधिक पुष्पोषित होता है, इसके कारण देवता या जादू टोना से मानव परेशान हो जाता है और उन्हें स्वनिर्मित रूप से देखने की भावना उत्पन्न होती है। इसके फलस्वरूप जीवन के विभिन्न पहलुओं से सम्बन्धित एक-एक देवता का जन्म होता है। यही बहु-देववाद का स्तर है। इसमें अनेक देवताओं पर विश्वास किया जाता है जो कि जीवन के विभिन्न पक्षों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

(iii) बहुदेववाद अर्थात् अनेक देवी देवताओं के कारण जो मानसिक उलझनें बनी रहती हैं। इसी कारण मनुष्य अपने समस्त चिन्तन को या श्रद्धा-विश्वास को अनेक देवी-देवताओं में न बांटकर किसी एक ईश्वर पर अपनी समस्त श्रद्धा, विश्वास आदि को ~~निछावर~~ निछावर करने के लिए उद्यत होता है। यही अद्वैतवाद की स्थिति है जबकि यह विश्वास किया जाता है कि प्रत्येक घटना या वस्तु का कारण किसी एक देवता का कार्य है। दूसरे शब्दों में बाद में यह विश्वास किया जाने लगा कि ईश्वर केवल एक है और समस्त वस्तुएं या घटनायें उसी एक ईश्वर की सृष्टि है। जैसे-जैसे मानव का दृष्टिकोण व्यापक और चिन्तन शक्ति गम्भीर और गहन होती है वैसे-वैसे अद्वैतवाद की अवधारणा भी अधिक स्पष्ट और दृढ़ होती है। धार्मिक स्तर का अद्वैतवाद चरम स्तर है।

2. तात्विक स्तर — चिन्तन के इस स्तर पर ईश्वर की वैयक्तिक शक्ति की धारणा का लोप होता है। ईश्वर का चिन्तन व्यक्ति के रूप में न होकर एक अमूर्त शक्ति के रूप में होता है। चिन्तन के अनुसार जो कुछ भी इस संसार में हो रहा है वह एक व्यक्ति के रूप में ईश्वर के कारण नहीं बल्कि एक अदृश्य या निराकार शक्ति के कारण हो रहा है। इस शक्ति का अस्तित्व है, परन्तु इसका स्वरूप किसी व्यक्ति विशेष या किसी शरीर विशेष से नहीं है। उस अमूर्त, निराकार शक्ति के आधार पर जो कुछ भी हो रहा है वह शाश्वत और (स्थायी) पूर्ण है। इस स्तर की कोई विशिष्ट विशेषता उल्लेखनीय नहीं है क्योंकि यह स्तर धार्मिक और प्रत्यक्षात्मक स्तर के बीच का स्तर है।

इस प्रकार, तात्विक अवस्था में जो कि प्रथम अवस्था का एक संशोधन मात्र है, मनुष्य का मस्तिष्क यह मान लेता है कि अलौकिक प्राणी नहीं बल्कि अमूर्त शक्तियाँ जो कि सभी जीवों में अन्तर्निहित होती हैं, समस्त घटनाओं को उत्पन्न करती हैं।

3. <u>वैज्ञानिक या प्रत्यक्षात्मक स्तर</u> — चिन्तन की यह अन्तिम अवस्था है। इस अवस्था में मनुष्य का मस्तिष्क निरपेक्ष धारणाओं, विश्व की उत्पत्ति और लक्ष्य तथा घटनाओं के कारणों की व्यर्थ खोज को त्याग देता है और उनके नियमों के अर्थात् उनके अनुक्रम तथा समरूपता के स्थिर सम्बन्धों के अध्ययन में लग जाता है। सम्मिलित रूप से तर्क तथा निरीक्षण इस ज्ञान का साधन है।

तात्विक विचार शाश्वत या स्वयं पूर्ण हो सकता है, पर वास्तविक तर्कों तथा तथ्यों पर आधारित नहीं हो सकता। जब व्यक्ति तात्विक विचारों को छोड़कर निरीक्षण और तर्क के आधार पर इस संसार की घटनाओं को समझने और परिभाषित करने लगता है तब ही वैज्ञानिक या प्रत्यक्षात्मक स्तर में उसका प्रवेश होता है। कॉम्ट का कथन है कि तर्क और निरीक्षण सम्मिलित रूप में वास्तविक ज्ञान का आधार है। जब हम किसी घटना की व्याख्या करते हैं तो कुछ सामान्य तथ्यों और उस घटना-विशेष के बीच सम्बन्ध ढूंढने का प्रयत्न करते हैं। यह अन्वेषण निरीक्षण के द्वारा ही संभव हो सकता है। निरीक्षण ही प्रमाण है क्योंकि वह कल्पना से परे वास्तविक है। कॉम्ट के अनुसार विश्व के विभिन्न तथ्यों, घटनाओं आदि को समझने का वास्तविक तथा निर्भर योग्य साधन निरीक्षण और वर्गीकरण ही है। प्रत्यक्षात्मक स्तर पर मनुष्य इसीलिए न तो काल्पनिक महल बनाता है और न ही तात्विक दृष्टि में संसार के विभिन्न तत्वों को देखने का प्रयास करता है। इस स्तर पर ज्ञान का संग्रह ही एकमात्र साध्य या अन्तिम उद्देश्य है।

मानव चिन्तन के उक्त तीन चरणों की विवेचना के क्रम में कॉम्ट ने स्पष्ट किया है किया कि तीन स्तरों का पृथक-पृथक अस्तित्व नहीं हो सकता है। दूसरे शब्दों में, ये तीनों स्तर एक दूसरे से पूर्णतया परे हैं अथवा एक स्तर के बाद ही दूसरे स्तर का आविर्भाव होता है, ऐसा सोचना उचित नहीं होगा। हो सकता है कि धार्मिक विषयों में हम धार्मिक स्तर पर हों, जीवन के आदर्शों के सम्बन्ध में तात्विक स्तर पर और जीवित रहने के साधनों के सम्बन्ध में वैज्ञानिक स्तर पर। इन तीनों स्तरों का अनोखा समन्वय भारतीय समाज में मिलता है। उदाहरण के लिए, हिन्दू विवाह आज भी धार्मिक स्तर पर है और हिन्दू लोग विवाह को एक धार्मिक संस्कार के रूप में मानते हैं। अतः मानव चिन्तन अथवा ज्ञान के तीनों स्तर पूर्णतया पृथक नहीं हैं। कॉम्ट की इस विचारधारा को एक अन्य उदाहरण द्वारा और अधिक स्पष्ट किया जाता है। जैसे एक वैज्ञानिक है जो कि अन्य सभी विषयों में विज्ञान पर या वैज्ञानिक पद्धति पर विश्वास करता है, परन्तु यदि उसके पुत्र की मृत्यु हो जाती है तो हो सकता है कि वह वैज्ञानिक ढंग से अपने आपको सान्त्वना न दे सके। ऐसे अवसरों पर उसके लिए तात्विक विचारों का सहारा लेना अधिक उचित होगा और वह यह सोचकर कि संसार में मिलन

और विरह, सुख और दुख दोनों को ही सहना पड़ता है, या धार्मिक आक... यह निष्कर्ष निकालकर कि ईश्वर जो कुछ भी करता है हमारी भलाई के लिए करता है। इस प्रकार का सोच उसे धीरज दे सकता है या देता है।

अतः स्पष्ट है कि मानव ज्ञान या चिन्तन की उपर्युक्त तीनों अवस्थाएं एक ही समाज में या एक ही मस्तिष्क में साथ-साथ पाई जा सकती हैं। कॉम्ट ने इस तथ्य को कभी भी भुलाने पर अधिक बल दिया है, क्योंकि उनका कथन है कि इस सत्य को भूल जाने पर ही इस तीन स्तर के महान नियम के सम्बन्ध में कोई आपत्ति या इसकी कोई आलोचना सम्भव हो सकती है, अन्यथा कदापि नहीं। सन् 1839 में इस नियम के सम्बन्ध में कॉम्ट ने लिखा था—"प्रत्येक प्रकार से इस पर विचार-विमर्श तथा हर तरह से इसकी परीक्षा करते हुए सत्रह वर्ष का निरन्तर गहन चिन्तन मुझे पहले से ही इस महान विषय के सम्बन्ध में, बिना किसी वैज्ञानिक हिचक के, यह घोषणा करने का अधिकार देता है कि हम सदैव ही इस ऐतिहासिक धारणा को परिपुष्ट और स्थिर पायेंगे, प्राकृतिक दर्शनशास्त्र के अन्य विभागों में वास्तव में मान्य किसी भी सामान्य तथ्य की भाँति मुझे तो अब यह धारणा भी पूर्णतया प्रमाणित ही प्रतीत होती है।

मानव चिन्तन की उपर्युक्त तीन अवस्थाओं के व्याख्या के क्रम में कॉम्ट ने विभिन्न सामाजिक संगठनों का उल्लेख किया है। अन्य शब्दों में कॉम्ट के मतानुसार, मानव चिन्तन के स्तर और सामाजिक संगठन में एक प्रत्यक्ष सम्बन्ध है और इसलिए मानव चिन्तन के प्रत्येक स्तर पर एक विशेष प्रकार का सामाजिक संगठन पाया जाता है। इन संगठनों को हम विभिन्न ऐतिहासिक प्रमाणों के अनुसार निम्नवत प्रस्तुत कर सकते हैं—

1. जब मानव ज्ञान धार्मिक अवस्था पर होता है तब प्रत्येक चीज की भाँति सामाजिक जीवन तथा संगठन को भी ईश्वरीय इच्छा के प्रतिरूप माना जाता है। इस स्तर पर समाज का स्वरूप-सम्बन्धी उल्लेखनीय सिद्धान्त Divine Theory होता है। इसके अनुसार समाज की उत्पत्ति और अस्तित्व ईश्वर की इच्छा से है। इसी कारण राजनीतिक सत्ता ईश्वरीय अधिकार पर आधारित होती है। राजा को ईश्वर का प्रत्यक्ष प्रतिनिधि माना जाता है और इसलिए यह माना जाता है कि राजा के समस्त आदेशों को उचित या अनुचित का विचार न करते हुए सबको मानना चाहिए। चूँकि राजा पृथ्वी पर ईश्वर का प्रत्यक्ष प्रतिनिधि है, इस कारण उसके शब्द ही कानून है और उस कानून का पालन करना समस्त जनता का धर्म है। इस स्तर पर ऐसी ही अनेक लोक गाथाओं के द्वारा सामाजिक नियन्त्रण किया जाता है और लोगों को उन्हें चुपचाप मानना भी पड़ता है। ऐसा नहीं करने पर उन्हें ईश्वरीय दण्ड को भोगना पड़ता है।

. तात्विक स्तर पर सामाजिक संगठन और राज्य शक्ति के स्वरूपों में परिवर्त
न होता है। ईश्वरीय अधिकार की अवधारणा को त्यागकर प्राकृतिक अधि-
ार को अपनाया जाता है और इसी के आधार पर मनुष्यों का राजनीतिक
म्बन्ध निर्धारित तथा नियमित होता है। इस स्तर का सामाजिक संगठन प्र-
म स्तर से अधिक प्रगतिशील होता है और राजकीय शक्ति की निरंकुश
त्ता घट जाती है तथा व्यक्तिगत स्वतंत्रता की अवधारणा जन्म लेती है
इस स्तर पर पुरोहितवाद का भी विकास होता है और राजा का पद पोपके
द के अधीन होता है।

तीसरा स्तर प्रत्यक्ष स्तर है जो पिछले स्तरों से बहुत भिन्न होता है। इस स्तर की व्यवस्था का आधार वैज्ञानिक ज्ञान या निरीक्षण, परीक्षण और प्रयोग की व्यवस्थित कार्यप्रणाली होती है। इस अवस्था के विचारक घटनाओं के अन्तिम कारणों को खोजने के चक्कर में नहीं पड़ते हैं बल्कि निरीक्षण और परीक्षण तथा अनुभव के आधार पर संगठनों का निर्माण करते हैं। ~~यह~~ यह स्तर विज्ञान के अधिकाधिक विकास के अनुकूल परिस्थितियाँ उत्पन्न करता है और इसमें इसी कारण औद्योगिक युग का प्रादुर्भाव होता है। इस स्तर में नए आविष्कार करने की प्रवृत्ति बढ़ती है और लोकतन्त्रात्मक राज्य संगठन का बोलबाला होता है। मानव-सभ्यता के विकास का यह एक उत्तम अन्तर है।

इस प्रकार कॉम्ट ने यह विचार दिया कि मानवज्ञान में जैसे-जैसे विकास होता है वैसे-वैसे सामाजिक जीवन में भी विकास होता है। इस महान चिन्तन के द्वारा कॉम्ट ने विकास की चर्चा की है और Law of three stages के आधार पर समाज में परिवर्तन का अध्ययन किया।

आलोचना— कॉम्ट द्वारा प्रस्तुत तीन स्तरीय नियमों में पूर्णता के बावजूद भी कुछ बिन्दुओं पर आलोचनाएँ की गई हैं, जो निम्नवत प्रस्तुत हैं:-

1. Comte ने जो विचार दिया है उन्हें पूर्ण रूप से मान्य नहीं कहा जा सकता है बल्कि उन्होंने विकास के सिद्धान्त के आधार पर सामाजिक परिवर्तन की चर्चा की है। वर्तमान शताब्दी में विकास सम्बन्धी विचारों की ~~अधिक आलोचना की है~~ आलोचना करते हुए इसे अवास्तविक और अवैज्ञानिक बताया गया है।

2. कॉम्ट के त्रिस्तरीय नियम उनके मौलिक चिन्तन का प्रतिफल नहीं है बल्कि इसके पूर्व फ्रांस के दूसरे विचारक Condorcet ने ~~[illegible]~~